❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
# आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

93वें बलिदान दिवस (23 दिसम्बर) के अवसर पर

**अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज**

को कृतज्ञ राष्ट्र की ओर से

## भावपूर्ण श्रद्धाँजलि

वर्ष 43, अंक 8 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 16 दिसम्बर, 2019 से रविवार 22 दिसम्बर, 2019
विक्रमी सम्वत् 2076 सृष्टि सम्वत् 1960853120
दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

# नागरिकता संशोधन एक्ट का पूर्ण समर्थन करता है आर्यसमाज

## दूरदर्शी निर्णय हेतु भारत सरकार को हार्दिक बधाई

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| सुरेश चन्द्र आर्य | प्रकाश आर्य | धर्मपाल आर्य | विनय आर्य | महाशय धर्मपाल | सतीश चड्डा |
| प्रधान | मन्त्री | प्रधान | महामन्त्री | प्रधान | महामन्त्री |
| सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा | | दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा | | आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य | |

# 93 वाँ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

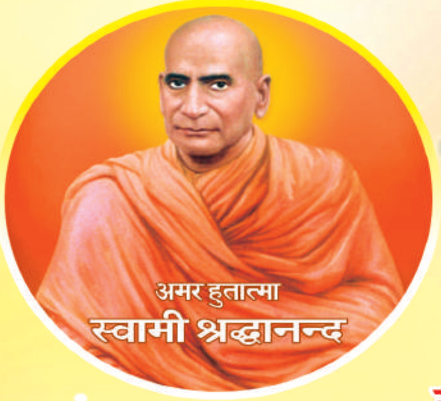


# शोभायात्रा

## बुधवार 25 दिसंबर 2019

यज्ञ :- प्रातः 8.00 से 9.30 बजे तक

स्थान :- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान भवन, नया बाजार, दिल्ली

**भव्य शोभायात्रा का प्रारम्भ प्रातः 10 बजे**

# विशाल सार्वजनिक सभा

| -: समय :- | -: स्थान :- |
|---|---|
| दोपहर 1 से 3:30 बजे | रामलीला मैदान, अजमेरी गेट, नई दिल्ली-2 |

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर हजारों की संख्या में पहुंचकर संगठन का परिचय दें।

नोट : ऋषि लंगर की व्यवस्था सभा की ओर से रहेगी ।

निवेदक **आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य), 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001**

(नोट : अपने वाहनों को पीली कोठी की ओर से लाने में आपको सुविधा होगी।)

ऋषि दयानन्द की शिक्षा को जन-जन तक पहुंचाएं : सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाकर जग को-विश्वधरा महकाएं

## आमजनों तक सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने का अत्याधुनिक मंच

# विश्व पुस्तक मेला-2020 प्रगति मैदान, नई दिल्ली

| | | | |
|---|---|---|---|
| 4 से 12 जनवरी, 2020 | हिन्दी साहित्य स्टाल | अंग्रेजी साहित्य स्टाल | मेला समापन |
| प्रातः 11से रात्रि 8 बजे | हॉल नं. 12 | हॉल नं. 7 | 12 जनवरी, 2020 |

**50 हजार नए व्यक्तियों तक 10/- रु. में सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने में अपना योगदान दें**

सत्यार्थ प्रकाश छूट हेतु दी गई दानराशि 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। दानदाताओं महानुभावों के नाम आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित किए जाएंगे

विश्व पुस्तक मेले में समय दान करने वाले सहयोगी कार्यकर्त्ता अपने नाम श्री सुखबीर सिंह आर्य (9350502175) को नोट कराएं।

वेद-स्वाध्याय

# वेदरूपी कवच से निर्भयता

**यः सपत्नो योऽ सपत्नो यश्च द्विषन् शपाति नः।**
**देवास्तं सर्वे धूर्वन्तु ब्रह्म वर्म ममान्तरम्।।** *- अथर्व० 1/19/4*
ऋषिः **ब्रह्मा**।। देवता - **देवाः**।। छन्दः **अनुष्टुप्**।।

**शब्दार्थ - यः** =जो **सपत्नः** = मेरा समानक्षेत्र में प्रतियोगी है **यः** = जो **असपत्नः** = असमान क्षेत्र में प्रतियोगी है **यः च** = और जो **द्विषन्** = द्वेष करता हुआ **नः** = मुझे **शपाति** = शाप देता है, कोसता है **तम्** = उसे **सर्वे देवाः** = सब देव **धूर्वन्तु** = ताड़ना करें, **मम** = मेरा तो **अन्तरम्** = भीतरी, अन्दर से रक्षा करनेवाला **वर्म** = कवच, मेरा रक्षासाधन **ब्रह्म** = ब्रह्म है, ज्ञान है, वेदज्ञान है।

**विनय -** मैं किसी से द्वेष नहीं करता, किन्तु फिर भी कई भाई मेरे सपत्न व असपत्न होकर मुझसे शत्रुता रखते हैं। जो सपत्न हैं, समान क्षेत्रवाले हैं वो तो प्रायः ईर्ष्या व मत्सर के कारण मुझसे वैर रखते हैं और जो असपत्न हैं, असमान क्षेत्रवाले हैं, वे प्रायः मुझसे इस कारण शत्रुता करते हैं क्योंकि मेरे किसी कर्त्तव्यपालन से उनके स्वार्थ को धक्का पहुँचता है। किसी भी कारण से कोई सपत्न या असपत्न, या कोई भी मेरा अन्य भाई जब मुझसे द्वेष करता है, मुझसे प्रीति नहीं रखता और अतएव मुझे शाप देता है, कोसता है, गाली देता है, बुरा-भला कहता है, मेरे लिए अपनी शक्ति-भर अनिष्टचिन्तन करता है तो इससे मेरा तो कुछ बिगड़ता नहीं, किन्तु उसी का नाश होता है। जब तक मुझे ज्ञान नहीं मिला था तब तक तो मैं ऐसे शापों से घबरा उठता था और इनका वास्तव में मुझपर बहुत प्रभाव भी होता था। जब कोई मुझे समाचार-पत्र या व्याख्यान द्वारा आम जनता में गालियाँ देता था, मेरे परिचित समाज में मेरी झूठी निन्दा फैलाता था तो इसे जानकर मैं बड़ा अशान्त हो जाता था और मेरा चित्त बड़ी देर तक उद्विग्न रहता था, किन्तु जब से कुछ ज्ञान मिला है, कुछ वेद-ज्ञान मिला है, प्रभु की भक्ति के प्रसाद में कुछ आत्म-ज्ञान मिला है तब से यह 'ब्रह्म', यह ज्ञान ही मेरा भीतरी कवच बन गया है। इस ज्ञान में रहता हुआ मैं इन शापों से सर्वथा अस्पृष्ट रहता हूँ और सदा आनन्द में रहता हूँ, पर वह बेचारा मुझसे द्वेष करने वाला तो अवश्य मारा जाता है; मनुष्यसमाज के सब देव लोग, सब ज्ञानी पुरुष, उस निरर्थक द्वेष करनेवाले को डाँटते हैं, ताड़ना करते हैं तथा सब ईश्वरीय देव, सब 'ऋतु' देव उस अपराध के लिए उसे अवश्य दण्ड देते हैं। इसमें कोई क्या कर सकता है?

**साभार :- वैदिक विनय**

**वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

सम्पादकीय

## छोटे पर्दे पर अंधविश्वास का प्रसारण : एक चिन्ता और चिन्तन

# टेलिविजन या अंधविश्वास का विजन

*......स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने न केवल अंधविश्वासों और विधवा विवाह जैसी अनेकों कुप्रथाओं के खिलाफ एक लम्बी लड़ाई लड़ी बल्कि अपने प्राण तक समाज के लिए न्योछावर कर दिए। जिस बात को स्वामी दयानन्द सरस्वती जी और विज्ञान ने साबित कर दिया कि चुड़ैल या डायन, भूत-प्रेत, जैसी कोई चीज होती ही नहीं है। लेकिन टीवी ऑन करते ही विभिन्न चौनलों पर ये दिख जाते हैं। आलोकिक और काल्पनिक घटनाओं पर आधारित सीरियलों का प्रसारण इतनी बड़ी संख्या में हो रहा है, इनसे न केवल बच्चों के मन और मस्तिष्क पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है, बल्कि अंधविश्वास के कारण होने वाली घटनाएं भी दिनों दिन बढ़ रही हैं। ....*

निर्माता गुलखान द्वारा बनाया गया सीरियल "ये जादू है जिन्न का" धडल्ले से टीवी स्क्रीन पर चल रहा है। नकारात्मक किरदारों से लेकर आलोकिक शक्तियों, जिन्न, डायन, भूत-प्रेत से भरपूर ये सीरियल टीआरपी के लिहाज से तीसरे नंबर पर चल रहा है। दूसरा ऐसा ही सीरियल है 'कुंडली भाग्य' कहने को तो इसमें प्रज्ञा और बुलबुल की लंबे समय से खोई हुई छोटी बहनों, प्रीता और सृष्टि की कहानी है लेकिन अंधविश्वास के तड़के से यह सीरियल दर्शकों के लिए जायकेदार हो जाता है। ऐसे न जाने कितने सीरियल आज टीवी पर परोसे जा रहे है जो समाज को दिन प्रतिदिन अंधविश्वास की ओर ले जा रहे हैं।

मनोरंजन के लिए परोसे जा रहे ये सीरियल बड़ी आसानी से लोगों की दिनचर्या में शामिल हो रहे हैं। सिर्फ शामिल ही नहीं हो रहे हैं बल्कि बच्चों से लेकर बड़ों तक के मन में अपनी मजबूत पकड़ बना चुके हैं। साल 2013 में राजस्थान के गंगापुर सिटी की घटना से सभी परिचित होंगे। जब एक परिवार अपने घर में टीवी पर अगर कुछ देखता था तो सिर्फ एक देवता शिव पर केन्द्रित धारावाहिक देवों के देव महादेव देखता था। एक दिन परिवार ने इसी धारावाहिक को देखा और फिर शिव के आने का इंतजार करते हुए पूजा में लग गया। शाम तक शिव का इंतजार किया जब कोई नहीं आया तो समूचे परिवार ने खुद शिव से मिलने की ठानी और स्वर्ग जाने की बातचीत करते हुए बहुत सहज भाव से सबने जहर खा लिया। आठ में से तीन तो किसी तरह पड़ोसियों के आ जाने बचाए जा सके लेकिन पांच की मौत हो गयी थी। यह घटना अपने आप में इतना बताने के लिए काफी है समाज में पहले से पसरे अंधविश्वासों के अलावा कोई टीवी धारावाहिक किस कदर लोगों के सोचने समझने की क्षमता को खत्म कर सकता है। जुलाई, 2018 को बुराड़ी के संत नगर में सामूहिक आत्महत्या की घटना न केवल दिल्ली, बल्कि पूरे देश में खासी सुर्खियों में रही थी धार्मिक मान्यताओं को लेकर एक हँसते खेलते एक ही परिवार के 11 लोगों ने फांसी लगाकर आत्महत्या की थी।

इतना ही नहीं मेरठ में 25 साल की एक युवती आरती के पति की एक दुर्घटना में मौत हो गयी थी। कुछ समय पहले उसकी पांच साल की भतीजी ने कहा बुआ आप सफेद साड़ी क्यों नहीं पहनती हैं। आप तो विधवा हो यह बात सुनकर आरती अवाक रह गयी थी। लेकिन उसकी भतीजी को लगा कि यह बेवकूफ है जो उसकी बात नहीं समझ रही है। इसके बाद भतीजी ने अपनी बुआ को कलर्स टीवी पर प्रसारित होने वाले धारावाहिक गंगा की मिसाल देते हुए समझाया था कि गंगा मेरे जितनी छोटी बच्ची है और उसका पति मर गया इसलिए वह सफेद साड़ी पहनती है। एक तरफ जहाँ आरती के घरवाले उसे सामान्य जीवन की और मोड़ने की कोशिश में जुटे थे तभी उसके सामने छोटी सी बच्ची का खौफनाक सवाल खड़ा हो उठता है।

जहाँ आज टीवी धारावाहिक ये जादू है जिन्न का, डर सबको लगता है, भूत-प्रेत, नाग-नागिन के साथ दर्शकों को मनोरंजन की खुराक पेश कर रहे हैं। वही गंगा जैसे धरावाहिक विधवा जीवन का कड़ाई से पालन करने वाली एक विधवा को नायिका बना देते हैं। एक या दो सीरियल की बात नहीं यदि ध्यानपूर्वक देखा जाये तो इन जड़ों को मजबूती सारे सीरियल दे रहे हैं। कहीं अघोरी, तो किसी पर नजर, दिव्य-टी, कोई डायन, तो कोई कुंडली भाग्य जैसे कई सीरियल शामिल हैं। इनमें डायन से लेकर पिसाच तक को दिखाया जाता है। यहां काल्पनिक कहानियों को इस तरह से आकर्षक बनाकर दिखाया जाता है कि बच्चें और कई बार तो महिलाएं भी उसे सच मान लेते हैं।

यानि आज धारावाहिक पर वही चीजें दिखाई जा रही जिसके खिलाफ लड़ते हुए स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने न केवल अंधविश्वासों और विधवा विवाह जैसी अनेकों कुप्रथाओं के खिलाफ एक लम्बी लड़ाई लड़ी बल्कि अपने प्राण तक समाज के लिए न्यौछावर कर दिए। जिस बात को स्वामी दयानन्द सरस्वती जी और विज्ञान ने साबित कर दिया कि चुड़ैल या डायन, भूत-प्रेत, जैसी कोई चीज होती ही नहीं है। लेकिन टीवी ऑन करते ही विभिन्न चौनलों पर ये दिख जाते हैं। आलौकिक और काल्पनिक घटनाओं पर आधारित सीरियलों का प्रसारण इतनी बड़ी संख्या में हो रहा है, इनसे न केवल बच्चों के मन और मस्तिष्क पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है, बल्कि अंधविश्वास के कारण होने वाली घटनाएं भी दिनों दिन बढ़ रही है। विज्ञान और टेक्नोलोजी ने जो चीजें नकार दी आज उसी विज्ञान और टेक्नोलोजी के सहारे उसे फिर उसी अँधेरे में ले जाने की कवायद खुलेआम चल रही है।

आखिर कौन इसका लाभ ले रहा है किसको इसका फायदा है, कौन है ये लोग जो पुनः समाज को रसातल में ले जा रहे है उन्नत सोच के बजाय यह पाखंड बेच रहा है? ऐसे सवालों के बजाय अखबारों से इन सीरियलों का विज्ञापन लगातार जारी है। समाज में जागरूकता का आभाव है या ये आभाव पैदा किया जा रहा है क्योंकि जिस तरीके से यह सीरियल बड़ी आसानी से लोगों की दिनचर्या में शामिल हो रहे हैं, उन्हें देखकर लगता है कि बड़ी विशाल आंविश्वास की दुनिया का निर्माण किया जा रहा है। हालाँकि सरकार की ओर से इस तरह के चीजों को रोकने और समाज में अंधविश्वास फैलने से रोकने के लिए सेंसर बोर्ड का गठन किया है, लेकिन अफसोस वे इसे रोक नहीं पा रहे हैं।

*- जारी पृष्ठ 7 पर*

**नागरिकता संशोधन विधेयक से सड़कों पर मचा कोहराम**

# ए.एम.यू., जे.एन.यू. और जामिया मिलिया : केन्द्र बवाल के या शिक्षा के?

नागरिकता संशोधन बिल देश के दोनों सदनों में पास हो जाने के बाद देश में कोहराम मच गया है। असम और पूर्वोत्तर के कई राज्यों में हिंसक प्रदर्शन हो रहे हैं। कई लेखक, कलाकार, कार्यकर्ता और कई संगठन इस बिल के खिलाफ आग में घी डालने का कार्य कर ही रहे थे कि अचानक देश की राजधानी दिल्ली भी हंगामे से अछूती नहीं रही। इस बिल के विरोध में जुम्मे की नमाज के बाद दिल्ली के जामिया मिलिया के छात्रों ने उग्र प्रदर्शन किया। बिल का विरोध करने निकले छात्रों ने जमकर पत्थरबाजी की जिसके बाद उन्हें भगाने के लिए पुलिस को आंसू गैस के गोले छोड़ने पड़े और लाठी चार्ज करनी पड़ी। हालाँकि ये बात समझ से परे है कि मुस्लिम बाहुल देश पाकिस्तान, अफगानिस्तान और बांग्लादेश के मुस्लिमों को अपने देश की नागरिकता देने के लिए प्रदर्शन क्यों किया जा रहा है?

*.....सभी को याद होगा अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में कुछ समय पहले जिन्ना के चित्र को लेकर बवाल मचा था। आज नागरिकता को लेकर बवाल है। लेकिन सवाल ये है क्या ये सच में ये बवाल नागरिकता को लेकर है या एक कट्टरपंथी सोच का प्रतीक है जिसे एएमयू, जामिया मिलिया का छात्र संघ कोई रास्ता निकालने के बजाय जिन्दा रखना चाहता है ताकि देश के मुस्लिम समुदाय को इस आधार पर उत्तेजित और एकत्रित किया जा सके।......*

इस्लाम धर्म के मुताबिक जुमे के दिन को अल्लाह के दरबार में रहम का दिन माना गया है। ऐसी मान्यता है कि इस दिन नमाज पढ़ने से अल्लाह इंसान की पूरे हफ्ते की गलतियों को माफ कर देते हैं। तो वहीं जुम्मे के दिन को ईसाई बेहद अशुभ मानतें है क्योंकि इस दिन शैतान की ताकत बढ़ जाती है। हालाँकि किसका क्या मानना है यह अपना नजरिया होता है। लेकिन इस बात से कतई इंकार नहीं किया जा सकता कि दिल्ली के जामिया मिलिया के छात्रों का उग्र प्रदर्शन राजनीति और मजहब से प्रेरित नहीं था। क्योंकि जुम्मे की नमाज के बाद जिस तरीके से देश भर में हिंसक प्रदर्शन किये गये उसे देखकर लगता है कि पूरा प्रदर्शन प्री प्लान था। क्योंकि गुरुवार की रात से ही प्रदर्शनकारी इकठ्ठा होने लगे थे। लेकिन देश की राजधानी में वो हिंसा पर उतर आयेंगे इसकी उम्मीद किसी ने नहीं की थी। शुक्रवार को हजारों छात्र जामिया यूनिवर्सिटी के बाहर सड़क पर उतर आए और केंद्र सरकार और इस बिल के खिलाफ नारेबाजी शुरू कर दी लेकिन थोड़ी ही देर में प्रदर्शनकारी हिंसक हो गए और पुलिस पर पत्थरबाजी करने लगे। जवाब में पुलिस ने आंसू गैस के गोले दागे और छात्रों पर काबू पाने के लिए लाठियां भी भांजी। कुछ देर के लिए जामिया का इलाका युद्ध का मैदान बन गया।

सिर्फ दिल्ली ही नहीं नमाज के बाद पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद जिले में नागरिकता संशोधन कानून का विरोध कर रहे हजारों उग्र मुस्लिम प्रदर्शनकारी अचानक बेलडांगा रेलवे स्टेशन के परिसर में आ घुसे और उन्होंने प्लेटफार्म, दो तीन मंजिले भवनों और रेलवे कार्यालयों में आग लगा दी वहाँ तैनात आरपीएफ कर्मियों के साथ मारपीट भी की, इसके अलावा उत्तर प्रदेश के सहारनपुर की जामा मस्जिद में जुमे की नमाज के बाद नमाजियों ने केंद्र सरकार के विरोध में **कैब** के खिलाफ जमकर नारेबाजी की। साथ ही प्रदर्शन कर रहे लोगों ने बैनर-पोस्टर भी लहराए।

कानपुर में मस्जिदों के बाहर नमाजियों ने जुमे की नमाज के बाद विरोध प्रदर्शन करने का निर्णय लिया इंडियन यूनियन मुस्लिम लीग ने रूपम चौराहे से मोहम्मदी मस्जिद तलाक महल तक मार्च निकाला। काजी मौलाना रियाज हशमती के अगुवाई में विरोध जताया गया और जूही लाल कालोनी की मस्जिद के बाहर प्रदर्शन किया गया।

बरेली में नागरिकता संशोधन बिल को लेकर शुक्रवार को मुसलमानों ने ऐलान किया था कि जुमे की नमाज के बाद नमाजी सड़कों पर उतरेंगे. मौलाना तौकीर रजा खां ने तमाम मस्जिदों के इमाम और नमाजियों से जुमा नमाज बाद नोमहला मस्जिद में इक्ट्ठा होकर प्रदर्शन किया गया, आगरा से लेकर फिरोजाबाद में काले झंडे और पोस्टर चस्पा कर विरोध जताया, बहराइच अंबेडकरनगर जिले में नागरिक संशोधन बिल के खिलाफ बसखारी कस्बे में विरोध के लिए इकट्ठा हुए दो दर्जन युवाओं को पुलिस ने खदेड़ा, दौड़ाकर पकड़ा, तो वहीं बिहार की राजधानी पटना में भी नागरिकता कानून के खिलाफ लोगों का गुस्सा उबाल पर था।

जुम्मे की नमाज के बाद ऐसे हालत अभी तक सिर्फ कश्मीर में देखने को मिलते थे अब इस्लाम के नाम पर यह हालात देश भर में देखने को मिल रहे है किसके लिए? पाकिस्तान, बांग्लादेश म्यांमार, अफगनिस्तान से आये मुसलमानों के लिए या इस्लाम के लिए? यानि प्रदर्शनकारी चाहते हैं कि ज्यादा से ज्यादा संख्या में इस देश में मुसलमान आकर बस जायें और इन्हें हकुमत करने और शरियत लागू करने का मौका मिले।

आज जो प्रदर्शनकारी धर्मनिरपेक्षता का हवाला दे रहे है लोकतंत्र की दलील दे रहे है ये लोग कल तक तीन तलाक और शरियत कानून की मांग कर रहे थे तब न इनके लोकतन्त्र और भारतीय संविधान से बड़ा इस्लाम था। आज ये लोग देश को भारत के संविधान का आर्टिकल 14 पढ़ा रहे है। यह कहा जाता है कि इस्लाम के मूल चरित्र में कोई कट्टरता, असहिष्णुता और हिंसा नहीं है, यह सब विकृतियां हैं और दिग्भ्रमित लोगों द्वारा की गई गलत व्याख्याएं हैं। परंतु सोचने की बात यह है कि यदि मूल विचार में हिंसा नहीं हो तो क्या केवल उसकी गलत व्याख्या के कारण ही जुम्मे के दिन विश्व भर में अपराध कौन कर रहा है?

शुक्रवार को हुए देश भर के प्रदर्शनों पुलिस की सतर्कता के कारण कोई गम्भीर हादसा नहीं हुआ। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों को वहाँ से खदेड़ दिया कुछ दिन बाद बात आई गयी हो जाएगी और कुछ दिन बाद लोग इस बात को भूल भी जायेंगे फिर गंगा जमुनी तहजीब का गीत गाया जायेगा लेकिन जैसे ही कोई दूसरा सुअवसर आएगा फिर ऐसे ही हिंसक प्रदर्शन देखने को मिलेंगे।

सभी को याद होगा अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में कुछ समय पहले जिन्ना के चित्र को लेकर बवाल मचा था। आज नागरिकता को लेकर बवाल है। लेकिन सवाल ये है क्या ये सच में ये बवाल नागरिकता को लेकर है या एक कट्टरपंथी सोच का प्रतीक है जिसे एएमयू, जामिया मिलिया का छात्र संघ कोई रास्ता निकालने के बजाय जिन्दा रखना चाहता है ताकि देश के मुस्लिम समुदाय को इस आधार पर उत्तेजित और एकत्रित किया जा सके।

अपने अपने पक्ष को सही मानकर उन पर अड़ जाना और उसे अहं का प्रतीक बना लेना किसी भी दशा में उचित नहीं कहा जा सकता। इस प्रकरण को कवर करने वाले पत्रकारों और फोटोग्राफरों को पीटा गया उनके कैमरे तोड़ने की कोशिश की गयी। हमलावर छात्र विश्वविद्यालय के थे या बाहरी ऐसा लगता है कि प्रसंग में खुली छूट दी जा रही है और प्रकरण को हवा दी जा रही है।

देश इन्तजार कर रहा है कि कोई सकारात्मक और कड़ा पग इस सन्दर्भ में उठाया जाए ताकि फिर कोई इसी तरह का नया विवाद उठा कर देश की शान्ति को भंग करने का प्रयास सम्भव न हो सके। इस सुलगती आग को एक बार तो बुझाना ही होगा वरना यह देश को लील जाएगी। इसके बाद बाकी क्या बचेगा, इसकी कल्पना ही भयावह है।

***– राजीव चौधरी***

---

**प्रेरक प्रसंग**

## वे ज्ञान समुद्र थे

आर्यसमाज के इतिहास में पण्डित गणपतिजी शर्मा चुरू (राजस्थान)-वाले एक विलक्षण प्रतिभावाले विद्वान् थे। ऐसा विद्वान् यदि किसी अन्य देश में होता तो उसके नाम नामी पर आज वहाँ विश्वविद्यालय स्थापित होते। पण्डित गणपतिजी को ज्ञान-समुद्र कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के शब्दों में उनके पाण्डित्य की कहानी पढ़िए-

''पण्डित गणपति शर्मा शास्त्रार्थ करने में अत्यन्त पटु थे। मैंने उनके चार-पाँच शास्त्रार्थ सुने हैं। शास्त्रार्थ करते समय उनका यह नियम था कि शास्त्रार्थ के समय उन्हें कोई किसी प्रकार की सम्मति न दे और न ही कुछ सुझाने की इच्छ करे, क्योंकि इससे उनका काम बिगड़ता था। लुधियाना में एक बार शास्त्रार्थ था। पण्डितजी ने सनातनधर्मी पण्डित से कहा था-पण्डितजी! मेरा और आपका शास्त्रार्थ पहले भी हुआ है। आज मैं एक बात कहना चाहता हूँ, यदि आप सहमत हों, तो वैसा किया जाए। पण्डित के पूछने पर आपने कहा-महर्षि दयानन्दजी से लेकर आर्यसमाजी पण्डितों ने जो पुस्तकें लिखी हैं, मैं उनमें से कोई प्रमाण न दूँगा और इस विषय पर सनातनधर्मी पण्डितों ने जो पुस्तकें लिखी हैं, उनमें जो प्रमाण दिये हैं, आप उनमें से कोई प्रमाण न दें।

इसी प्रकार यदि आप चाहें तो जो प्रमाण आप कभी शास्त्रार्थ में दे चुके हैं और जो प्रमाण मैं दे चुका हूँ, वे भी छोड़ दें। आज सब प्रमाण नये हों। सनातनी पण्डित ने यह नियम स्वीकार नहीं किया। इससे पण्डितजी की योग्यता और स्मरणशक्ति का पूरा-पूरा परिचय मिलता है।''

***– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु***
***साभार :***
***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी***

**तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

# विक्टोरिया आर्यसमाज (ऑस्ट्रेलिया) द्वारा मेलोबर्न में नए आर्य समाज की स्थापना

## योग गुरु स्वामी रामदेव एवं सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री विनय आर्य जी ने किया शिलान्यास

विश्व व्यापक आर्य समाज परिवार में आस्ट्रेलिया के आर्य जनों का अपना अहम स्थान है। बात चाहे दिल्ली में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 की हो अथवा विश्व में कहीं भी आर्य महासम्मेलन या अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन हो। आर्य समाज आस्ट्रेलिया का हमेशा विशेष योगदान रहता ही रहता है। वहां पर रहने वाले सभी आर्य नर-नारी महर्षि दयानंद सरस्वती की शिक्षाओं और आर्य समाज के सिद्धांतों को निरंतर आगे बढ़ा रहे हैं। 30 नवंबर से 1 दिसंबर के बीच आर्य समाज विक्टोरिया आस्ट्रेलिया द्वारा मेलबर्न में एक नए आर्य समाज के भव्य निर्माण हेतु भूमि पूजन का विशेष आयोजन किया गया। इस अवसर पर भारत से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री एवं दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, विश्व विख्यात योग गुरु बाबा रामदेव जी, अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के महामंत्री श्री जोगेंद्र खट्टर जी एवं कई अन्य महानुभाव जब आस्ट्रेलिया पहुंचे तो वहां के आर्य जनों ने सभी का भावपूर्ण अभिनंदन-स्वागत किया।

मेलबोर्न में आर्य समाज के नव निर्माण हेतु यज्ञ द्वारा भूमि पूजन कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इस अवसर पर स्वयं रामदेव जी, विनय आर्य जी, श्री जोगेंद्र खट्टर जी और वहां के समस्त अधिकारी गण तथा गणमान्य अतिथिगण यज्ञ में यजमान बने और आर्य समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए सभी ने मंगलकामना और प्रार्थना की। ज्ञात हो कि इस विशेष आयोजन का महीनों पूर्व ही आस्ट्रेलिया में प्रचार-प्रसार शुरू हो गया था। स्वामी रामदेव जी कहीं पर जाएं और वहां पर योग कक्षाओं का आयोजन न हो तो यह असंभव सी बात है। अत: मेलबोर्न में स्वामी रामदेव जी के सान्निध्य में योग शिविरों का विशेष आयोजन किया गया था। शिविर में भाग लेने वाले स्त्री, पुरुष, बच्चे, युवा और वृद्धजन सभी उत्साही नजर आए। स्वामी जी ने योग के विषय में प्रेरक संदेश देते हुए कहा कि प्रात: सायं योग करें और निरोग रहे। "करें योग, रहें निरोग"। स्वामी जी अपने चिर परिचित शैली में भजन गाते हुए योग कराकर सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। स्वामी जी ने प्राणायाम, योगाभ्यास और आहार संबंधी सूत्र भी प्रदान किए।

मेलबोर्न में नए आर्य समाज के भूमि पूजन के उपलक्ष्य में वहां एक विशेष संगोष्ठि एवं योग सम्मेलन आदि का आयोजन भी किया गया। जिसमें आर्य समाज विक्टोरिया के समस्त अधिकारी गण तथा सुश्री एम.एस.वाघेला जी (सासंद विक्टोरिया आस्ट्रेलिया) मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उनके साथ सुश्री

*- शेष पृष्ठ 6 पर*

आर्यसमाज विक्टोरिया के अन्तर्गत स्थापित मेलबोर्न वैदिक सैन्टर का उद्घाटन योगगुरु स्वामी रामदेव जी के करकमलों से किया गया। इस अवसर पर सम्बोधन करते आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया के मन्त्री श्री योगेश आर्य जी, सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं मंचस्थ स्थान सांसद सुश्री एम.एस. वधेला जी, आचार्य सनत कुमार जी एवं अन्य अधिकारीगण।

मेलबोर्न वैदिक सन्टर में यज्ञ करते स्वामी रामदेव जी साथ में हैं श्री विनय आर्य जी एवं श्री जोगेन्द्र खट्टर जी तथा अन्य आर्यजन। यज्ञ श्री आचार्य सनत कुमार जी ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर विक्टोरिया आर्यसमाज एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आस्ट्रेलिया के अधिकारियों को आर्य महासम्मेलन-2018 की एलबम एवं स्मृति भेंट करते स्वामी रामदेव जी व श्री विनय आर्य।

वैदिक कॉन्सेप्ट स्कूल के उद्घाटन के अवसर पर सम्बोधित करते विक्टोरिया आर्यसमाज के प्रधान श्री देवेन्द्र पथिक शर्मा जी एवं मंचस्थ स्वामी रामदेव जी, सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री व दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं स्थानीय अधिकारी व अतिथिगण। मेलबोर्न वैदिक सन्टर में योग प्रशिक्षण देते योग गुरु स्वामी रामदेव जी।

कार्यक्रम के अवसर पर आर्यसमाज विक्टोरिया, मेलबोर्न वैदिक सैन्टर के कार्यकर्ताओं एवं अधिकारियों के साथ स्वामी रामदेव जी एवं श्री विनय आर्य जी

# हे कल्याण मार्ग के पथिक, स्वामी श्रद्धानंद ! राष्ट्र कभी तुम्हें भुला नहीं सकता

## स्वामी श्रद्धानन्द जी के 93वें बलिदान दिवस (23 दिसम्बर) पर शत-शत नमन्

कल्याण मार्ग का पथिक – यह शीर्षक मन में आते ही आर्य जगत के महान संन्यासी, राष्ट्रभक्त, ऋषि भक्त, कर्मयोगी और अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानंद जी के विशाल व्यक्तित्व का प्रेरक चित्र सामने प्रकट हो जाता है। आर्य समाज के इतिहास में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती जी का नाम और उनके लोकोपकारी सेवा कार्य इतने विस्तृत और विराट हैं कि उन्हें पूरी तरह से लिखना नामुमकिन तो नहीं अत्यंत कठिन कार्य है। स्वतंत्रता संग्राम में स्वामी श्रद्धानंद का योगदान अत्यंत प्रेरणाप्रद और अविस्मरणीय है। राष्ट्र के प्रति उनकी श्रद्धा, निष्ठा स्तुत्य और अनुकरणीय है। आर्य समाज के आंदोलन में स्वामी जी का स्थान बहुत ऊंचा है। मानव समाज को सुदिशा प्रदान करने के लिए उन्होंने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को सर्वोपरि मानने वाले स्वामी श्रद्धानंद जी का मौलिक चिंतन तथा उनकी कर्मशीलता ने एक नई क्रांति को जन्म दिया था। आर्य समाज के विस्तार में शुद्धि आंदोलन, संगठनात्मक शक्ति की वृद्धि का परिचायक था। चार वर्ण और चार आश्रम के वास्तविक स्वरूप को उन्होंने मानव समाज में भली-भांति प्रचारित किया। स्वामी श्रद्धानंद केवल आधुनिक राजनेताओं की तरह केवल मंच पर खड़े होकर भाषण देने वाले वक्ता ही नहीं थे अपितु उन्होंने संगीनों के सामने छाती खोलकर उस निर्भीकता का भी परिचय दिया जो एक क्रांतिकारी महान आत्मा ही कर सकता है। भारत की प्राचीन वैदिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु स्वामी जी ने गुरुकुलों की स्थापना करके उसे पुनर्जीवित किया था।

आर्य जगत के महान साहित्यकार, लेखक डॉ. भवानीलाल भारतीय जी ने 'कल्याण मार्ग का पथिक' की समीक्षा करते हुए स्वामी श्रद्धानंद जी के प्रति कृतज्ञता और आभार व्यक्त करते हुए यह स्पष्ट लिखा कि "कल्याण मार्ग का पथिक" स्वामी श्रद्धानंद जी की आत्म कथा में उन्होंने स्पष्ट प्रेरणा प्रदान की है कि जीवन में चाहे कितने भी विरोध, अवरोध हों लेकिन मनुष्य के संकल्प को कोई हरा नहीं सकता। इस सारगर्भित प्रेरणाप्रद पुस्तक से ज्ञात होता है कि स्वामी श्रद्धानंद जहां एक अद्भुत और अद्वितीय योद्धा थे वहीं एक सफल लेखक तथा साहित्यकार भी थे। बुद्धि और कर्म का यह समन्वय अपने आपमें एक मिसाल है।

अत: आईए, स्वामी श्रद्धानंद जी के 93वें बलिदान दिवस पर उनके जीवन दर्शन का अवलोकन करें तथा भारत की उस महान विभूति से, उनके महान बलिदान से प्रेरणा प्राप्त कर अपने जीवन के लक्ष्य और उद्देश्य को सुनिश्चित करें। स्वामी जी एक ऐसे अनोखे महापुरुष थे जिन्होंने **"असतो मा सदगमय-तमसो मा ज्योतिर्गमय-मृत्योर्मा अमृतंगमय"** उपनिषद के इस रहस्य को अपने जीवन में आत्मसात कर मानव मात्र को अंधेरों से उजालों की ओर बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। पंजाब के जालंधर जिले में सतलुज नदी के किनारे तलवन उप नगर में सन् 1856 (सम्वत् 1913) को नानक चन्द के घर में जन्म हुआ। उच्च शिक्षा बलिया बनारस, बरेली इलाहाबाद भिन्न-भिन्न स्थानों पर हुई। जीवन की स्वच्छन्दता अभिशाप बन गई और धीरे-धीरे मद्य, मांस सेवन आदि वृत्ति में संलिप्त हो जीवन को नष्ट करने पर तुल गए। जीवन सुधार के लिए किए गए पिता के सभी प्रयास विफल रहे। अगस्त 1879 को महर्षि दयानन्द जी का बरेली में आगमन हुआ और पिता नानकचन्द ने स्वामी जी के व्याख्यान को सुना तो नास्तिक पुत्र के संशय निवृत्ति की आशा जगी। स्वामी श्रद्धानन्द जी अपनी जीवनी में लिखते हैं कि पिता ने घर आते ही कहा-"बेटा मुंशीराम! कल मेरे साथ चलना।" उत्तर में हाँ तो कह दी, परन्तु मन में वही भाव रहा कि केवल संस्कृत जानने वाला साधु बुद्धि की क्या बात करेगा। लेकिन दूसरे दिन जब उन के दर्शन किए तो उस दिव्य आदित्य मूर्ति को देखकर श्रद्धा उत्पन्न हुई। प्रिय पाठको समझ लीजिए की मुन्शीराम में श्रद्धानन्द बनने के लक्षण जागृत होने लगे। उन्होंने व्याख्यान सुना तो महर्षि की तर्क संगत एवं युक्ति सहित प्रमाणित बातें सीधे उनके मन में घर करती गई।

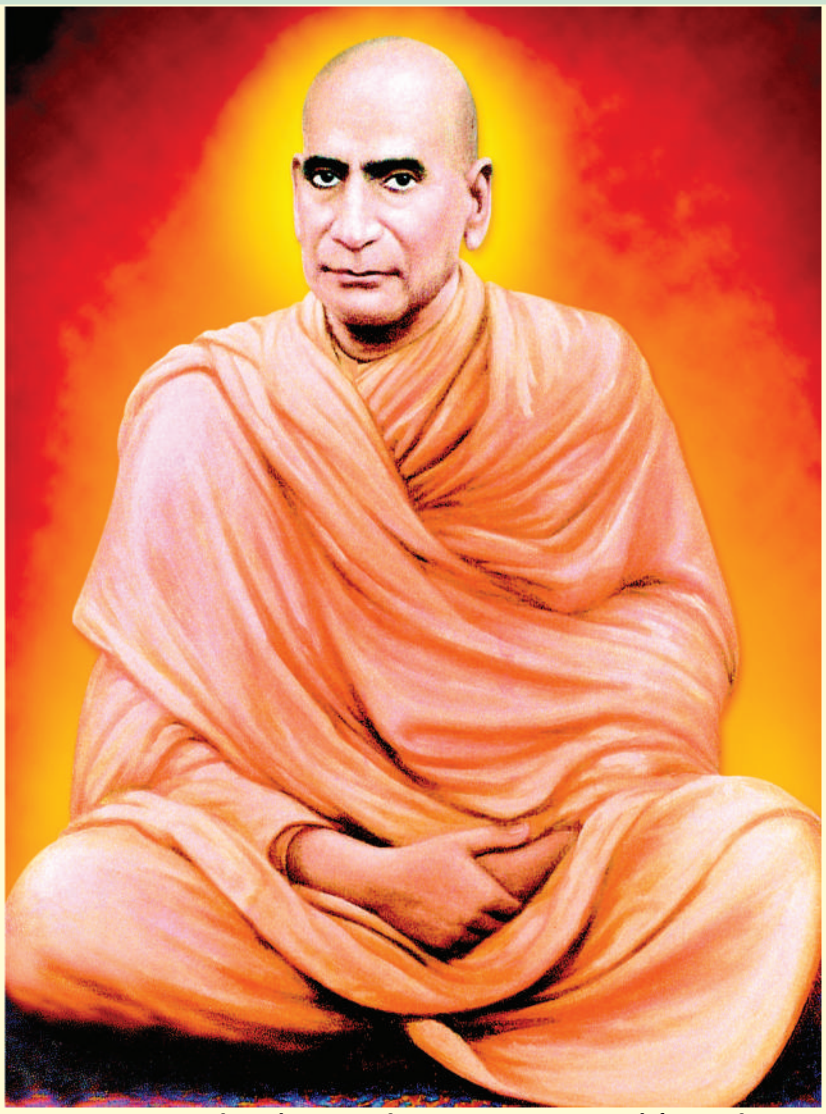

*......महात्मा मुंशीराम ने संन्यास दीक्षा का अपना साक्षात् कोई गुरु नहीं बनाया अपितु महर्षि एवं उनकी शिक्षाओं को स्मरण करते हुए 12 अप्रैल 1917 को संन्यास ग्रहण करते समय वेद की पुस्तक अपने सिर पर रखकर कहा कि- "श्रद्धा मेरे जीवन की आराध्य देवी है, अब भी श्रद्धा भाव से प्रेरित होकर ही संन्यास आश्रम में प्रवेश कर रहा हूँ। इसीलिए इस यज्ञकुण्ड की अग्नि साक्षी रखकर मैं अपना नाम 'श्रद्धानंद' रखता हूँ, जिसमें मैं अगला सब जीवन भी श्रद्धामय बनाने में सफल हो सकूं।".....*

वे अनायास महर्षि की ओर खिंचते चले गए। वे पक्के अनीश्वर वादी थे, लेकिन महर्षि की प्रेरणा से वे प्रथम श्रेणी के आस्तिक बन गए। महर्षि द्वारा किए गए शंका समाधानों ने उनके समस्त संशय, भ्रम आदि समूल नष्ट कर दिए, उन्होंने महर्षि को अपना गुरु और पथ प्रदर्शक मान लिया। एक बार उन्होंने महर्षि से कहा कि- "महाराज! आपकी तर्कना शक्ति बड़ी प्रबल है, आपने मुझे चुप तो करा दिया, परन्तु यह विश्वास नहीं दिलाया कि परमेश्वर कोई हस्ती है।"

ऋषिवर ने कहा कि- मैंने कब यह प्रतिज्ञा की थी? कि मैं तुम्हारा विश्वास परमेश्वर पर करा दूंगा। तुम्हारा परमेश्वर पर विश्वास उस समय होगा जब वह प्रभु स्वयं तुम्हें विश्वासी बना देंगे। और कठोपनिषद् का यह मन्त्र कह सुनाया **'नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन....'** भाव है कि प्रभु की प्राप्ति ईश सम्बन्धी प्रवचनों के सुनने अथवा तीव्र बुद्धि से या अत्यधिक श्रुतिवान् बनने से नहीं होती। जिस किसी पर प्रभु अपनी कृपा करते हैं उसे अपना भक्त चुन लेते हैं। और इसी महामन्त्र की प्रेरणा ने मुन्शीराम को कल्याण मार्ग का पथिक, महात्मा और अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती के राष्ट्रोत्कृष्ट पद पर स्थापित कराने में महान् भूमिका निभाई। महर्षि द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर उनके मन में आर्य समाज के प्रति समर्पण की भावना जाग उठी और शीघ्र ही वे लाहौर आर्य समाज के अग्रणी नेता माने जाने लगे। धीरे-धीरे वे पूरे राष्ट्र के नेता बन गए। महात्मा मुंशीराम महर्षि द्वारा निर्देशित प्राचीन वैदिक 'शिक्षा पद्धति के परिपोषक थे। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली द्वारा ही मानव मात्र का कल्याण होगा, स्वामी जी ने गुरुकुल निर्माण में अपना सर्वस्व व्यय किया और अपने पुत्रों को विद्यार्थी के रूप में समर्पित भी किया। आज यह गुरुकुल कांगड़ी एक विश्वविद्यालय के रूप में विश्व में ख्याति अर्जित कर रहा है। इनके द्वारा गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ एवं कन्या गुरुकुल दिल्ली जो आज देहरादून में स्थानान्तरित हो चुका है तथा अनेक प्रसिद्ध गुरुकुलों की स्थापना की जो आज वेद मार्ग को पोषित करने में विशेष भूमिका निर्वहन कर रहे हैं।

महात्मा मुंशीराम ने संन्यास दीक्षा का अपना साक्षात् कोई गुरु नहीं बनाया अपितु महर्षि एवं उनकी शिक्षाओं को स्मरण करते हुए 12 अप्रैल 1917 को संन्यास ग्रहण करते समय वेद की पुस्तक अपने सिर पर रखकर कहा कि- "श्रद्धा मेरे जीवन की आराध्य देवी है, अब भी श्रद्धा भाव से प्रेरित होकर ही संन्यास आश्रम में प्रवेश कर रहा हूँ। इसीलिए इस यज्ञकुण्ड की अग्नि साक्षी रखकर मैं अपना नाम 'श्रद्धानंद' रखता हूँ, जिसमें मैं अगला सब जीवन भी श्रद्धामय बनाने में सफल हो सकूं।"

**राष्ट्र एवं हिन्दी भाषा प्रेम :** स्वामी श्रद्धानंद जी को अपने श्रद्धेय गुरु दयानंद जी से स्वराज्य, स्वदेश एवं स्वभाषा आदि उच्च आदर्श विरासत में प्राप्त हुए थे। गुरुकुल कांगड़ी में विज्ञान आदि विषयों सहित सभी विषय हिन्दी में पढ़ाए जाते थे। गुरुकुल से एक पत्र 'सद्धर्म-प्रचारक' उर्दू में निकलता था, उसके ग्राहक उर्दू के

- शेष पृष्ठ 6 पर

Continue from last issue

# Marriage and House Holding

**Types of Marriages**

. There are eight types of marriages. The best of them is *'Brahma",* where the couple has observed complete celibacy, and is scholarly, religious and of good character, and wherein they happily agree to marry with mutual consent. Three types belong to the middle order: *'Daiva'* or 'divine', wherein a religious minded son-in-law is given a well dressed and ornamented bride; *'Arsha',* the bride is given away after getting something from the groom; and *'Prajapatya',* where the marraige is performed with the sole desire of progeny. Two marraiges of the 'lowest order' are; *'Asura',* where the either of the couple or bride is given some money for this purpose; and *'Gandharva',* where the couple marries with mutual eagerness, disregarding the laws and due to some or the other specific reason. The rest of the types are deplorable as well as avoidable: *'Rakshasa'* or 'Demonic', wherein marraige is performed through fighting, rape or dupe; and *'Paishacha'* or 'rascalic', wherein a sleeping or drunken girl is raped.

**Ideal Procedure**

The teachers of both sides should exchange mutually the biodata and photographs, etc., of all their marriagable wards, and after matching their qualities and qualifications they should give this material to the prospective parties for their perusal and consent, If they agree, their graduation bath ceremoney should be performed simultaneously and they should be left free to decide whether they would like to be married under the auspices of their teachers, or of their parents in their own homes. But for a better marriage, both should talk, discuss and make enquiries openly or in secret writing regarding all the concerned aspects, though in the presence of the elders only, so as their mutual love becomes stable.

**Proguny and Duties**

All the prescribed rituals should be performed properly, starting with *'Garhhadhana'* before first child-bearing intercourse, *'Pumsavana'* in the fourth month of pregnancy, and *'Simantonnayana'* in the eighth month. After child's. birth, the first ritual to be performed is *'Jatakarma',* the ceremony of the newly born, which should be followed by *Namkaran,* 'Name-giving', *Annaprasun* 'Food-tasting', ceremonies, etc., at the prescribed intervals. All the married couples should perform twice daily, at dawn and in evening, the *Sandhya* and Havana, as otherwise they should not think themselve as *'Dvijas'* or 'educated ones'. *Third* sacrificial daily act for them is to serve faithfully their own parents. The *Fourth* such act is to put some prepared food, before starting the meals, into fire, taken away from the cooking oven, as a symbol for providing some part of their meals for someone needy and suffering. This must be done with Mantras, as a ritual. The last sacred performance for the day is *'atithi Yajna'* honouring the uninvited guests. These are the most sacrificial perfor- mances expected from a house holder.

Marriage system is the most essential to regulate and keep in control, a society which otherwise might become corrupt. Looking to the old age and as also to the problem of heritage, the marraige is the only way out, as also because a householder alone is the centre of the whole of our social structure. But the marriage can only become fruitful, if both the partners are mutually pleased and are scholarly, industrious and worldly wise. Henceit is said that the real source and fruitfulness of happy married life is 'to be based on Barhmacharya coupled with self-selection.

***To be continued......***

***With thanks By: "Flash of Truth"***

पृष्ठ 4 का शेष

## आर्यसमाज मेलबोर्न....

कौशल्या जी वाघेला आदि भी उपस्थित थे। इस अवसर पर विनय आर्य जी ने महर्षि दयानंद की शिक्षाओं तथा उनके परोपकारी जीवन पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित जनसमुदाय को बताया कि महर्षि दयानंद सरस्वती ने वेद ज्ञान को मानव समाज के सामने प्रस्तुत कर एक अद्वितीय और अनुपम कार्य किया। स्वामी जी का मानना था कि संसार में कोई भी अन्य मत-मतांतर तो हो सकता है, संप्रदाय भी हो सकता है, लेकिन धर्म तो केवल वैदिक धर्म ही है। स्वामी जी ने नारी जाति के ऊपर उपकार किया, दलितों का उद्धार किया, भारत देश को आजाद कराया, ढोग-पाखंड और आडबंरों को दूर भगाया, मनुष्य मात्र को जीवन जीने की कला सिखाई और कल्याण का रास्ता दिखाया। श्री विनय आर्य जी ने वहां उपस्थित जनसमुदाय को आर्य समाज के सेवा कार्यो से भली भांति परिचित कराया। योग गुरु स्वामी रामदेव जी ने अपने संदेश में कहा कि आर्य समाज की विचारधारा से ही मानव समाज का निर्माण संभव है। महर्षि दयानंद के द्वारा निर्देशत पंच महायज्ञ विधि को अपनाए और जीवन सफल बनाए। हमारी वैदिक संस्कृति और संस्कारों से ही मानव समाज में सुख, शांति का समावेश संभव होगा।

इस भव्य और सुंदर कार्यक्रम का संपूर्ण आयोजन बहुत ही प्रेरक और उत्साहवर्धन करने वाला था। कार्यक्रम के प्रत्येक सत्र में अत्यंत प्रेरणा और संदेश प्रदान किए गए। सभी का स्वागत और सम्मान किया गया तथा सभी को पूरी सुविधाएं प्रदान की गई। प्रेम-सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम संपन्न हुआ और सभी ने प्रशंसा करते हुए विदाई ली।

***- देवेन्द्र, संयोजक, विक्टोरिया आर्य समाज***

पृष्ठ 5 का शेष

## हे कल्याण मार्ग के पथिक....

जानने वाले ही थे। लेकिन एक दिन अचानक वह पत्र सब ग्राहकों के पास हिन्दी भाषा में पहुंचा। यह एक चुनौति ही थी। जिस व्यक्ति ने घोषणा की हो कि वह गुरुकुल में उच्च शिक्षा मातृ-भाषा हिन्दी में देने का प्रबन्ध करेगा उसका पत्र उर्दू में, यह कैसे हो सकता था? वे किस प्रकार चुनौतियों का सामना करते थे, एक नहीं अनेक उदाहरण हैं। सत्याग्रह के समय जब जनता का जलूस दिल्ली घंटाघर की ओर बढ़ रहा था, तब गोरे सिपाहियों ने जलूस को रोकने के लिए गोली चलाने की धमकी दी थी। साधारण लोग ऐसी धमकी को सुनकर तितर-बितर हो जाते परन्तु श्रद्धानंद ही था जिसने छाती तानकर गोरों को गोली चलाने के लिए ललकारा। इतिहास साक्षी है कि गोरों की संगीने उस निर्भीक राष्ट्रभक्त संन्यासी के सामने झुक गई। यह उनके अदम्य साहस का एक नमूना ही है।

गांधी जी ने दक्षिण अफ्रीका से स्वामी जी को एक पत्र लिखा था ***"आप अपने गुरुकुल के छात्रों को स्वतंत्रता प्राप्ति के उच्च संस्कारों से सुशोभित कर रहे हैं। भारत लौटने पर मैं आपके चरणों में अपना शीश झुकाना चाहूंगा।"***

रेम्जे मेकनाल्ड इंग्लैंड के प्रधानमंत्री थे। सन् 1924 में उन्होंने लिखा था ***"यदि कोई ईसा मसीह की मूर्ति बनाना चाहे तो वह स्वामी श्रद्धानंद जी को अपने सम्मुख बिठाले तथा उनकी ही प्रतिमूर्ति बना ले।"*** महात्मा गांधी उनको बड़ा भाई कहते थे। श्रद्धानंद जी ने ही सर्वप्रथम उन्हें 'महात्मा' कह कर पुकारा था। स्वामी जी को अमृतसर के कांग्रेस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनाया गया। इससे कुछ समय पूर्व अमृतसर का जलियांवाला बाग काण्ड घटित हुआ था जिस कारण वहां कांग्रेस अधिवेशन करवाना असम्भव था। परन्तु महर्षि के उस अनन्य भक्त ने असम्भव को सम्भव कर दिखाया। उन्होंने असहयोग आंदोलन में भी अग्रणी नेता के रूप में कार्य किया। एक बार एक अंग्रेज अधिकारी ने पूछा कि- आप अपने गुरुकुल में बम भी बनाते हैं तो उनका स्पष्ट उत्तर था हां बनाता हूं। मेरा प्रत्येक छात्र एक बम ही तो है। वे ऐसे प्रथम आर्य नेता थे जिन्हें जामा मस्जिद के मिम्बर और स्वर्ण मन्दिर के अकाल तख्त साहब से प्रवचन करने का गौरव प्राप्त हुआ। भारत वर्ष के ऐसे महापुरुषों के कन्धों पर चलकर ही यह भारतीय संस्कृति, वर्तमान में प्रफुल्लित हो रही है। 23 दिसंबर 1926 का वह दिन हमारे लिए महान क्षति का दिन था, आर्य समाज के एक स्तम्भ को महाप्रयाण की ओर अग्रसर करने वाला दिन था जब एक मतान्ध मुस्लिम ने उनकी हत्या कर दी।

आर्य समाज के लिए इस कमी को पूरा करना कठिन ही नही दुष्कर भी है। इस महान क्रांतिकारी, राष्ट्र भक्त, संस्कृति पोषक, दलितोद्धारक अमर बलिदानी क्रांति की मशाल और महर्षि के सच्चे अनुयायी स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती को हमारा शत्-शत् नमन। उनके महान बलिदान को यह राष्ट्र भुला नहीं पाएगा। राष्ट्र हमेशा उनका ऋणी रहेगा। अतः संपूर्ण राष्ट्र का यह कर्त्तव्य है कि - आने वाले उनके बलिदान दिवस पर यह संकल्प ले कि हम उनके मिशन को सत्य और श्रद्धा से आगे बढ़ाएं उनके लिए यही हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इत्यो३म् शम्।।

***- आचार्य प्रद्युम्न शास्त्री***

**आर्यसमाज आर्यनगर पहाडगंज एवं अ.भा. श्रद्धानन्द दलितोद्धार सभा द्वारा**

**93वां स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह**

**22-23 दिसम्बर, 2019**

आर्यसमाज आर्यनगर पहाडगंज एवं अ. भारतीय दलितोद्धार सभा द्वारा संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द जी का 93वां बलिदान दिवस 23 दिसम्बर को प्रातः 8 से 12:30 बजे तक आर्यसमाज परिसर में आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर आयोजित यज्ञ के ब्रह्मा एवं वक्ता आचार्य भद्रकाम वर्णी जी होंगे। *-विजय कपूर, प्रधान*

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

**सत्यार्थ प्रकाश**

सत्य के प्रचारार्थ

| | | |
|---|---|---|
| • प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 50 रु. प्रचारार्थ 30 रु. | प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं |
| • विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16 | मुद्रित मूल्य 80 रु. प्रचारार्थ 50 रु. | |
| • स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8 | मुद्रित मूल्य 150 रु. | प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन |

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

**आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट**
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

## 90वां वार्षिक उत्सव का आयोजन

आर्य समाज बिडला लाईस कमला नगर द्वारा 27 से 29 दिसंबर 2019 तक 90वां वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जाएगा। सामवेदीय यज्ञ पं. कुंवरपाल शास्त्री के ब्रह्मत्व में तथा वेदपाठ श्री सर्वानंद गुरुकुल साधु आश्रम अलीगढ़ ब्रह्मचारियों द्वारा होगा। भजन श्री दिनेशदत्त आर्य एवं गौरव आर्य के होंगे। 28 दिसंबर को आर्य महिला सम्मेलन एवं 29 दिसंबर को पूर्णाहुति एवं समापन समारोह प्रात: 9:30 से 1:30 बजे तक आयोजित किया जाएगा। डॉ. छवि कृष्ण शास्त्री, श्री विनय आर्य, महामंत्री दिल्ली सभा के प्रवचन होंगे। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री धर्मपाल आर्य (सभा प्रधान), मुख्य अतिथि डॉ. हर्षवर्धन जी (केंद्रीय मंत्री), विशिष्ठ अतिथि श्री जोगीराम जैन (निगम पार्षद), श्री अरविन्द गर्ग जी (जिलाध्यक्ष भाजपा) आदि महानुभावों की गरिमामय उपस्तिथि रहेगी। – *मन्त्री*

## आर्यसमाजों में पुरोहित व्यवस्था

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना है कि दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों में पुरोहितों की अनिवार्य नियुक्ति हो। अत: जो महानुभाव दिल्ली में पुरोहित हेतु अपनी सेवाएं देना चाहते हों, वे कृपया अपनी योग्यता एवं अनुभव के प्रमाण पत्रों सहित यथाशीघ्र आवेदन करें। इच्छुक महानुभाव अपने आवेदन पत्र निम्न पते पर भेजें – **संयोजक, प्रचार विभाग**

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–1100011

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत**

## वैदिक उपदेशक एवं भजनोपदेशक परिचय पुस्तिका का प्रकाशन

आपको जानकर हर्ष होगा कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत के समस्त वैदिक उपदेशकों एवं भजनोपदेशकों की परिचय पुस्तिका प्रकाशित करने का निर्णय लिया है। इस पुस्तक में आर्यजगत के समस्त उपदेशक एवं भजनोपदेशक महानुभावों के नाम, पते, सम्पर्क सूत्र, संक्षिप्त जीवन परिचय फोटो के साथ प्रकाशित किया जाना सुनिश्चित किया है।

अत: समस्त उपदेशक/भजनोपदेशक महानुभावों से निवेदन है कि अपना संक्षिप्त जीवन परिचय – अपने जीवन, उपयोगी कार्य, परिवार, शैक्षिक योग्यता/प्रचार क्षेत्र व प्रमुख उपलब्धियों के विवरण के साथ भेजें, जिससे उन्हें पुस्तक में उचित स्थान दिया जा सके। कृपया अपना विवरण '**सम्पादक, वैदिक उपदेशक/भजनोपदेशक विरणिका**' के नाम **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा – 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली–110001**' के पते पर प्रेषित करें। – *महामन्त्री*

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सौजन्य से गुरुकुल चित्तौड़गढ़ (राजस्थान) में**

## नि:शुल्क स्वाध्याय एवं साधना शिविर

**26 से 30 दिसंबर 2019**

**पद्मिनी आर्ष कन्या गुरुकुल प्रताप नगर चित्तौड़गढ, राजस्थान**

दिल्ली सभा के सौजन्य से आचार्य कर्मवीर जी (रोजड़), डॉ. सोमदेव जी शास्त्री (मुम्बई) एवं श्री अमरसिंह जी (ब्यावर)के सानिन्ध्य में आयोजित शिविर में महर्षि दयानंद सरस्वती कृत पंच महायज्ञ विधि तथा सत्यार्थ प्रकाश के नवम समुल्लास का स्वाध्याय एवं अष्टांग योग के अनुसार साधना का अभ्यास कराया जाएगा। शिवरार्थी 25 दिसंबर की सायं अथवा 26 दिसंबर को प्रात: 7 बजे तक पहुंचने का प्रयास करें और अपने आने की पूर्व सूचना शीघ्र देवे। शिवरार्थियों के लिए पंच महायज्ञविधि, सत्यार्थ प्रकाश और कापी–पेन आदि की प्राप्ति की सुविधा शिविर स्थल पर भी रहेगी। अधिक जानकारी अथवा शिविर में भाग लेने के लिए सम्पर्क करें –

| **देवेन्द्र सिंह शेखावत** | **डॉ. सीमा श्रीमाली** | **सुखबीर सिंह आर्य** |
|---|---|---|
| अध्यक्ष | आचार्या | मन्त्री, दिल्ली सभा |
| 9414110646 | 9460617008 | 9350502175 |

पृष्ठ 2 का शेष

## टेलिविजन या अंधविश्वास....

ऐसे में वे ही कहीं–न–कहीं इस अंधविश्वास को फैलाने में अपना योगदान दे रहे हैं।

जबकि आज ऐसे सीरियलों की जरूरत है जो रूढ़ीवादी भ्रांतियों को तोड़े और लोगों के सामने किसी भी चीज का वैज्ञानिक विश्लेषण पेश करें। हमारी भारत भूमि में एक से बढ़कर एक महापुरुष, समाज सुधारक ज्ञानी तपस्वी महर्षि संत पैदा हुए है लेकिन अफसोस उनके जीवन पर धारावाहिक बनने के बजाय एक नया अन्धविश्वास केवल धार्मिक चैनल ही नहीं बल्कि सुबह की न्यूज से लेकर प्रगतिशील मुद्दों पर बहस कराने वाले चैनल भी तन्त्र मन्त्र के नाम पर लोगों के दिमाग के दरवाजे बंद करने पर जुटे है। ये लोग टीवी के जरिये एक ऐसा अँधा युग ला रहे है जहाँ तर्क और विज्ञान के सभी दरवाजे बंद है। क्या सरकार और मीडिया इन चीजों से अनजान है जबकि ऐसे सीरियल लोगों की बुद्धि को समाप्त कर रहे है, जिसका लाभ गली मोहल्लों में बैठे बंगाली बाबा से झाड़ फूंक वाले उठा रहे है और देश के कई राज्यों में डायन के नाम पर हत्याओं जैसे अपराध का ग्राफ सर उठाये खड़ा हैं।

– *सम्पादक*

## आर्यसमाज की सेवा ईकाई सहयोग द्वारा यज्ञ एवं वस्त्रों का वितरण

13 दिसंबर 2019 को दिल्ली में आई तेज हवाओं के साथ बारिश से सर्दी का बढ़ना स्वभाविक था। बच्चे और वृद्धजनों के लिए यह सर्दी हाड़ कंपाने का काम करती रही है। निर्धन बस्तियों में रहने वाले लोग जो पहले से ही सर्दी की मार से बेहाल हो रहे थे उन्हें बारिश ने ओर बेहाल कर दिया। निर्धन मजदूर लोगों के इस दर्द और पीड़ा का निवारण करने के लिए 14 दिसंबर 2019 को भलस्वा डेरी निकट जी.टी.रोड. करनाल बाईपास के पास रहने वाले लोगों के घर जो लकड़ी और फूंस के बने हुए थे। बारिश और हवा के कारण वह भी तहस–नहस हो गए थे। सहयोग की पूरी टीम भलस्वा डेरी के इन लोगों के बीच पहुंची और वहां पर गर्म कपड़े उन तमाम लोगों को वितरित किए जो इस प्राकृतिक आपदा से संकट में थे। गर्म कपड़े पाकर ठंड से ठिठुरते इन लोगों को बहुत राहत मिली और साथ में खुशी भी। बच्चे, बुर्जुग और युवा सभी ने राहत की सांस ली और सहयोग का धन्यवाद किया।

**गुरुकुल गौतम नगर का**

## 86वां वार्षिकोत्सव एवं चतुर्वेद ब्रह्मपारायण यज्ञ

गुरुकुल गौतम नगर, नई दिल्ली का 86वां वार्षिकोत्सव एवं 40वां चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ 16 दिसम्बर, 2019 से 5 जनवरी, 2020 तक सम्पन्न होगा। यज्ञ का समय प्रथम दिन प्रात: 8 से 11:30 बजे तथा अन्य दिनों में प्रात: 7 से 9:30 बजे रहेगा। सायंकाली यज्ञ 3 से 5:30 बजे तक प्रतिदिन होता रहेगा। समापन एवं भण्डारा 5 जनवरी, 2020 को प्रात: 8 बजे से आरम्भ होगा।

– *स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, प्राचार्य*

## मायापुरी क्षेत्र में सहयोग द्वारा यज्ञ

मायापुरी के ई–ए ब्लाक में एक विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें क्षेत्र के लोगों ने भाग लेकर प्रसन्नता व्यक्त की। इस अवसर पर सहयोग संस्था के माध्यम से की जा रही सेवाओं का संक्षिप्त वर्णन सुनकर सभी लोग अत्यंत प्रसन्न हुए और सभी ने एक स्वर में आर्य समाज द्वारा चलाए जा रहे इस सेवा कार्य से जुड़ने की इच्छा व्यक्त की। यह कार्यक्रम पूरी तरह से सकारात्मक सफलता का कार्य सिद्ध हुआ।

MDH **हवन सामग्री**
**मात्र 90/– किलो**
**10, 20 किलो की पैकिंग**
प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें –
**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा**
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली, मो. 9540040339

**शोक समाचार**

## सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री सोमदत्त महाजन जी का निधन

आर्यसमाज पंखा रोड, सी ब्लाक जनकपुरी के वर्षों तक प्रधान पद एवं अन्य पदों को सुशोभित करने वाले, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व उप प्रधान, अन्तरंग सभा सदस्य एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष एवं वर्तमान उप प्रधान श्री सोमदत्त महाजन जी का लगभग 91 वर्ष की आयु में 16 दिसम्बर, 2019 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 17 दिसम्बर को पूर्ण वैदिक रीति से बेरी वाला बाग सुभाष नगर स्थित शमशान घाट में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रचारकों द्वारा वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ किया गया, जिसमें सार्वदेशिक सभा, दिल्ली सभा, आर्य केन्द्रीय सभा एवं वेद प्रचार मंडलों के अधिकारियों के साथ–साथ अन्य अनेक महानुभावों ने पहुंचकर श्रद्धासुमन भेंट किए।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा आर्यसमाज पंखा रोड सी ब्लाक जनकपुरी में 19 दिसम्बर, 2019 को सम्पन्न हुई, जिसमें सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य, आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, महामन्त्री श्री सतीश चड्डा, समस्त वेद प्रचार मंडलों के अधिकारियों के साथ–साथ निकटवर्ती अनेक आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के पदाधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

## सार्वदेशिक सभा के पूर्व उप मन्त्री चौधरी लक्ष्मीचन्द का निधन

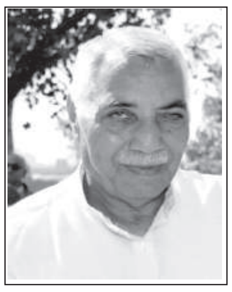

आर्यसमाज दीवान हॉल के पूर्व सेवक एवं अधिकारी, सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री, गाजीपुर गौशाला के मन्त्री चौधरी लक्ष्मी चन्द जी का दिनांक 18 दिसम्बर, 2019 को निधन हो गया।

उनका अन्तिम संस्कार 19 दिसम्बर को उनके पैतृक गांव कचहेड़ा (गाजियाबाद) में पूर्ण वैदिक स्थित शमशान घाट में वैदिक मन्त्रोच्चार के साथ किया गया।

**दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक–संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक**

सोमवार 16 दिसम्बर, 2019 से रविवार 22 दिसम्बर, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 19-20 दिसम्बर, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 18 दिसम्बर, 2019

## आय गुरुकुल तिहाड़ ग्राम में बालवाड़ी शिक्षक प्रशिक्षण

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ के अन्तर्गत आर्यसमाज तिहाड़ ग्राम द्वारा संचालित आर्य गुरुकुल तिहाड़ ग्राम के प्रांगण में 15 दिसंबर 2019 को बालवाड़ी शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का शुभारंभ किया गया। यह शिविर लगातार 25 दिसंबर 2019 तक चलेगा। इस शिविर में भारत के आदिवासी क्षेत्रों में अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित बालवाड़ी के रूप में जो शिक्षण संस्थाएं अत्यंत रचनात्मक कार्य कर रही हैं। छोटी उम्र से ही बच्चों को आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों का ज्ञान भी दिया जा रहा है। आदिवासी क्षेत्रों में उन तमाम बालवाड़ी शिक्षा केंद्रों के लिए प्रशिक्षण देने वाले शिक्षकों का निर्माण किया जाएगा। इस अवसर पर श्री विनय आर्य, श्री नीरज आर्य, श्री अरुण प्रकाश वर्मा सहित आर्य गुरुकुल रानी बाग एवं आर्य गुरुकुल तिहाड़ ग्राम के बच्चों सहित अनेक अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। सभी ने इसस कार्यक्रम के उद्घाटन अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन कर इस महान कार्य को प्रारंभ किया। इस अवसर पर बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए और विशिष्ट प्रतिभावान बच्चों को सम्मानित भी किया गया।

*- नीरज आर्य, मन्त्री*

*प्रतिष्ठा में,*

खुशखबरी! खुशखबरी!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

## वर्ष 2020 का कैलेण्डर प्रकाशित

**मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा**

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
मो. 09540040339

जानिये एम डी एच देगी मिर्च की शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता की

सच्चाई

यह मिर्च कर्नाटक में पैदा होती हैं। वहां पर लगभग 1000 औरतें पूरा दिन सिर्फ मिर्च की डंडी उतारने के काम में लगी रहती हैं। उसी मिर्च से देगी मिर्च तैयार होती है।

क्या आप लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला खाना चाहते हैं या बिना लकड़ी (डंडी) वाला मिर्च मसाला?

लकड़ी (डंडी) बिना मिर्च मसाला शुद्धता और स्वाद के गुणों से भरपूर होता है। मसाला लगता भी कम है और स्वाद भी भरपूर आता है। क्योंकि बिना लकड़ी (डंडी) के मिर्च की शुद्धता 20% से भी ज्यादा और बढ़ जाती है। जबकि लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला लगता भी ज्यादा है और स्वाद भी नहीं आता है और तो और यह सेहत के लिये भी नुकसान दायक होता है।

आप खुद ही फैसला कीजिये कि आप कैसा मिर्च मसाला खाना पसंद करेंगे क्योंकि सवाल सिर्फ शुद्धता और स्वाद का ही नहीं आप की सेहत का भी है।

MDH मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच -सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड
9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली -110015 फोन नं० 011-41425106-07-08
E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com
ESTD. 1919

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह